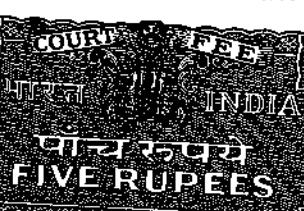


87



01- श्री बुमेन द्वे उम् 69 वर्ष, पेशा-वेतो।

02- प्रोरामपतो द्वे, अ॒ 60 वर्ष, पेशा-वेतो, व पेशनर
पितरान विन्द्यावारी प्रसाद द्वे दोनों निवासी, गांग दुर्गवाल,
तटसील-सिरसौर, जिला-रीवा ३०१००४ — अदेवकण
जनाम

दिनांक 15/27/2006

01- श्री वैशाल प्रसाद, वा०उम् 55वर्ष, पेशा-वेतो व नौकरी,

02- श्रीरमालाल उम् 48 वर्षपेशा-वेतो

दोनों के पिता श्री शोभन एवं मित्र दोनों निवासी, गांग दुर्गवाल,
तटसील-सिरसौर, जिला-रीवा ३०१००४ — अनादेवकण

~~अवधि संक्षिप्त
राजहर वृषभ स० प० अवलिवद~~

अदेवक-फ्र बा वत लिये जाने पुर्णविले रहन
श्रीमान् जी वारा पारित अदेवक-ठिन संक
13/7/06 जे नियरानी प्रवरण, आ०उ-
आ०- 1014 II 2006 प्रपारित किया
गया है, अन्तर्गत धारा- 51 वा०प००५-
राजस्व संहिता।

पुर्वितोन प्रवरण अदेवकपत्र बा वत
स्थगित लिये जाने अधीनस्थ स्यायालयों
का पालन व प्रभाव इस प्रवरण के निराकरण
तक के लिये अन्तर्गत धारा- 52 वा०प००५-डा०
स०।

आनंदवर,

अदेवक पत्र के आधार निम्न लिहित है :-

००१) यही अदेवक भाज द्वीपुनिदिलोदन प्रवरण प्रत्यु वर रहे हैं
जिनके सफल होने को परी सम्भावन है।

००२) वा० आदेवक अधीनस्थी भी विवाहित भूमि०- 730/१ र वा०
०• 30 डि०८०, नाम ठिकुरी तटसील-सिरसौर में गैरे ते फसल घोलर
वा० वजे हैं जिसे बेदखल लिये जाने का अदेवक अधीनस्थ स्यायालयों
धारा विधा गया है।

न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश—ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक रिव्यु 1527—तीन / 06

जिला रीवा

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
२९-६-२०१६	<p>उभय पक्ष के विद्वान अभिभाषकों द्वारा प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया गया। यह रिव्यु प्रकरण इस न्यायालय के प्रकरण क्रमांक निगरानी 1014—दो / 2006 में पारित आदेश दिनांक 13-7-2006 के विरुद्ध म0प्र0भू—राजस्व संहिता, 1959 (जिसे संक्षेप में संहिता कहा जायेगा) की धारा 51 के तहत प्रस्तुत किया गया है। संहिता की धारा 51 सहपठित व्यवहार प्रक्रिया संहिता के आदेश 47 नियम 1 में पुनर्विलोकन हेतु निम्नलिखित आधारों का उल्लेख किया गया हैः—</p> <p>1 किसी नई और महत्वपूर्ण बात या साक्ष्य का पता चलना जो सम्यक् तत्परता के पश्चात भी उस समय जब आदेश किया गया था, उस पक्षकार के ज्ञान में नहीं थी अथवा उसके द्वारा पेश नहीं की जा सकती थी, या</p> <p>2 मामले के अभिलेख से ही प्रकट कोई भूल या गलती, या</p> <p>3 कोई अन्य पर्याप्त कारण आवेदिका की ओर से पुनर्विलोकन आवेदन पत्र में ऐसी कोई बात अथवा साक्ष्य नहीं दर्शाया गया है, जो आदेश पारित करते समय उसकी जानकारी में नहीं थी, अथवा प्रस्तुत नहीं की जा सकती थी। अभिलेख से परिलक्षित कोई त्रुटि भी नहीं दर्शाई गई है, केवल इस न्यायालय द्वारा निकाले गये निष्कर्षों में त्रुटि दर्शाने का प्रयास किया गया है, जो पुनर्विलोकन का आधार नहीं है।</p> <p>2/ उपरोक्त विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में यह पुनर्विलोकन आधारहीन होने से अग्राह्य किया जाता है।</p> <p style="text-align: right;">(के०सी० जैन) सदस्य</p> 